सूचना - पत्र क्रमांक-02/2021

"पाथेय"

तलेसरा विकास संस्थान

कार्यालय : 98, बड़ा बाजार, चौमुखा मन्दिर के पास, उदयपुर-313001 (राज.)
Web : www.talesara.org • emial : tvsudaipur@gmail.com

अध्यक्षीय सम्बोधन

सम्मानित TVS परिवार सदस्यगण,

सादर जय जिनेन्द्र

कुलदेवी सतीमाता जी के आशीर्वाद से आप सभी के सुस्वास्थ्य की मंगलकामनायें। "पाथेय" के प्रथम संस्करण के साथ आप सभी से जुड़ाव और मजबूत हो गया। दूसरा संस्करण आप के हाथों में सौंपते हुए हम सभी कोरोना महामारी की दूसरी लहर के बाद फिर से जीवन में आशा का संचार महसूस कर रहे हैं।

जिस प्रकार दुनिया के पंचतत्व अर्थात् वायु, अग्नि, जल, आकाश और पृथ्वी हमारे जीने के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं, लेकिन जब ये ही विध्वंस का रूप लेते हैं तो आंधी-तूफान-ओले-दावानल-बाढ़-भूकम्प-सुनामी के माध्यम से हमें ईश्वर का स्मरण करने पर मजबूर कर देते हैं। उसी प्रकार हमारे शरीर की पंचेन्द्रियाँ अर्थात् नाक, कान, आँख, मुँह एवं त्वचा हमारे शरीर को स्वस्थ रखने हेतु आवश्यक अंग है लेकिन कोरोना महामारी ने इन्हीं इन्द्रियों के माध्यम से शरीर की सुरक्षा के लिये हमें सावचेत कर दिया है।

साथियों, महामारी तब आती है, जब हम प्रकृति के नियमों की अवहेलना करने लगते हैं। पहले भी वैज्ञानिकों ने प्लेग, हैजा, चेचक आदि महामारियों पर नियन्त्रण पाया था, हमें विश्वास है कि टीकाकरण (वैक्सीनेशन) एवं जैन सिद्धान्तों का पालन करके, यथा मुँह पर कपड़ा/मुखपट्टी बांधकर (मास्क लगाना), हाथ जोड़ कर अभिवादन कर (सोशल डिस्टेन्सिंग रखना), बार-बार हस्त प्रक्षालन कर (सेनिटाइजेशन करना), अपरिग्रह (डोनेशन करके) आदि के माध्यम से कोरोना पर भी शीघ्र नियन्त्रण पा लिया जायेगा, जरूरत है तो सिर्फ धैर्य और हिम्मत रखने की। इस कठिन समय में TVS परिवार के किसी भी सदस्य को किसी भी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो तो TVS कार्यकारिणी के सदस्यों को निःसंकोच सूचित करें, हम सभी आप के साथ खड़े हैं। किसी गीतकार ने लिखा भी है-

"किसी की मुस्कुराहटों पर हो निसार,
किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार
किसी के वास्ते हो तेरे दिल में प्यार......
जीना इसी का नाम है।"

अन्त में मैं TVS की कार्यकारिणी विशेष रूप से सचिव श्री प्रकाश जी का धन्यवाद करना चाहूँगा जिन्होंने 'पाथेय' के दूसरे संस्करण के प्रकाशन में सक्रिय भूमिका निभायी। "पाथेय" को और भी ज्ञानवर्धक एवं सूचनात्मक बनाये रखने हेतु आपके सुझाव मिलते रहेंगे, इसी आशा के साथ....

आपका शुभेच्छु
डॉ. पवन तलेसरा

सचिव की कलम से...

सबसे पहले आप सभी परिवारजनों को महावीर जयंती की शुभकामनाएँ।

प्रस्तुत सत्र का यह दूसरा सूचना-पत्र ''पाथेय''-2 आप सभी की जानकारी हेतु प्रेषित करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। इससे पूर्व प्रकाशित ''पाथेय''-1 के संस्करण से आपका प्रेम, स्नेह व सराहना प्राप्त हुई। उसी स्नेह से प्रेरित होकर इसके दूसरे अंक के प्रकाशन का प्रयास सकारात्मक रूप से आगे बढ़ा है।

कोरोना काल का निश्चित रूप से हम सभी की जीवन शैली पर गहरा प्रभाव पड़ा है इसने हमें कई मायनों में बेहतर तरीके से जीने का पाठ पढाया है। हालाँकि इसका प्रकोप अभी भी चल रहा है हम सभी को पूर्णरूपेण सतर्कता बरतनी होगी।

मैंउ नस भीम हानुभावोंक ोअ न्तःमनस ेस ाधुवादअ र्पित करता हूँ, जिन्होंने समाज के इस पुनीत कार्य के लिए विज्ञान के माध्यम से आर्थिक सहयोग दिया है। ''पाथेय''-2 के प्रकाशन में प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष सहयोग करने वाले सभी सज्जनों को भी मैं धन्यवाद देता हूँ।

हमारे पास कई परिवारों के वटवृक्ष और भी आयें हैं, लेकिन स्थानाभाव के कारण शेष सामग्री को अगले अंक में प्रकाशित किया जा सकेगा।

आशा है यह अंक आपके स्नेह व आशीष का पत्र बनेगा।

आपका शुभेच्छु
प्रकाश तलेसरा

प्रार्थना
तलेसरा परिवार समृद्ध हो अपना

तलेसरा परिवार के प्रेम भाव का झरना
हमारे हृदय में सदा बहा करे
"TVS" के हर घर में सदा हो शुभ मंगल
ऐसी भावना सबमे नित्य बहे।।
पिछले जन्म का ही था मंगल,
कि जीव में हमारे जैन धर्म का फूल खिला
उस पर पुण्यों का हुआ उदय
कि तलेसरा परिवार में जन्म मिला।।
अपने पूर्वजों की गौरव गाथा पर
सदा हम मान करें
और सींच कर संस्कारों से
अपने वंश पर अभिमान करें।।
घर घर जले ज्ञान की सद्ज्योती
अज्ञानता का नाश हो
सती माता के आशीर्वाद से
सुख शांति आनंद का प्रत्येक घर में वास हो।।
वीर प्रभु की वाणी को हर दिल में जलाना हे
ऊंच-नीच और अहम त्याग कर
हमें मंगल गीत गाना है
हमें मिलकर मंगल गीत गाना है।।

(प्रेषक : गगन तलेसरा)

विवाह योग्य :-

Name : **SRISHTI TALESARA**
DOB : 17.05.1996
Birth Time : 10:15 AM
Birth Place : UDAIPUR
Education : B.COM, MIB (Gold Medalist), Pursuing CS
Father : Lokesh Talesara,
Mob. : 9214460694
Mother : Renu Talesara,
Mob. : 6375672175

Name : **RAJAT TALESARA**
DOB : 15.01.1993
Birth Time : 1:41 PM
Height : 5'8"
Birth Place : UDAIPUR
Education : B.COM, M.B.A.
Businees : BADHAI The Wedding Dresses,
Father : Prakash C. Talesara
Mob. : 92697-38666
Mother : Beena Talesara, Mob. : 99504-99909

Name : **Aniket Talesara,** DOB : 21.06.1987,
Education : PGDB (Symbiosis), Pursuing CA Final,
Businees : Share Market Trade Investor
Father : Devendra Kumar Talesara
Mob. : 9829841199

तलसेरा विकास संस्थान
कार्यकारिणी 2019–2021

श्री करेड़ा पार्श्वनाथ जी

श्री सतीमाता जी

श्री पवन तलेसरा
अध्यक्ष

श्री प्रकाश तलेसरा
सचिव

श्री वैभव तलेसरा
कोषाध्यक्ष

श्री कुलदीपक तलेसरा
उपाध्यक्ष

श्रीमती निर्मला तलेसरा
संयुक्त सचिव

श्रीमती प्रणिता
जन सम्पर्क सचिव

श्री गगन तलेसरा
कार्यकारिणी सदस्य

श्री महेन्द्र तलेसरा
कार्यकारिणी सदस्य

श्री सुनील तलेसरा
कार्य. सदस्य

श्री दिलीप कुमार तलेसरा
कार्य. सदस्य

श्री अंकित तलेसरा
कार्य. सदस्य

श्री कमलेश तलेसरा
कार्य. सदस्य

श्री विजय तलेसरा
कार्य. सदस्य

आजीवन सदस्य

1. श्री हनुमन्त कुमार/सोभाग मलजी
2. श्री कमल प्रकाश/दौलत सिंह जी
3. श्री चन्द्र प्रकाश/बलवंत सिंह जी
4. श्री भेरू प्रताप/मालूम सिंह जी
5. श्री उम्मेद सिंह/सुजान सिंह जी
6. श्री नक्षत्र कुमार/हनुमन्त सिंह जी
7. श्री पवन/चन्द्र सिंह जी
8. श्री गगन/चन्द्र सिंह जी
9. श्री सुरेन्द्र सिंह/ख्याली लाल जी
10. श्री प्रकाश चन्द्र/मालूम सिंह जी
11. श्री महेन्द्र कुमार/गणेशलाल जी
12. श्री कुलदीपक/पदूम सिंह जी
13. श्री महेन्द्र सिंह/शांतिलाल जी
14. श्री प्रताप सिंह/बलवंत सिंह जी
15. श्री मुकेश/हनुमन्त कुमार जी
16. श्री दिलीप/हनुमन्त कुमार जी
17. श्री करण सिंह/मिठ्ठालाल जी
18. श्री चौथमल/घिसु लाल जी
19. श्री रमेश/हिम्मत सिंह जी
20. श्री वर्धमान सिंह/रतन लाल जी
21. श्री सोहनलाल/देवी लाल जी
22. श्री हेमेन्द्र/मोती लाल जी
23. श्री अंकित/चन्द्र प्रकाश जी
24. श्री पुनीत/प्रताप सिंह जी
25. श्री वैभव/बसन्त जी
26. श्री हेमन्त/मालूम सिंह जी
27. श्री अंशुल/भेरू प्रताप जी
28. श्री मयंक/भेरू प्रताप जी
29. श्री महेन्द्रकुमार/डूंगरसिंह जी
30. श्री अमित/प्रताप सिंह जी
31. श्री कमलेश/उम्मेद सिंह जी
32. श्री जीतेन्द्र/उम्मेद सिंह जी

JODH SINGH JI
(SMT. MOHAN BAI)

- Vimla ji (Ratan Lal Intodia)
- Balwant Singh (Sushila)
  - Ravi (Neelima)
    - Divay
    - Aksh
  - Monika (Mahip ji Lodha)
- Mahendra Singh (Chandra Kala)
  - Sonal (Badal ji Bordia)
  - Himanshu (Ruchika)
  - Deepak (Priyanka)
- Shakuntala (Roshan Lal ji Intodia)

पारिवारिक वट–वृक्ष

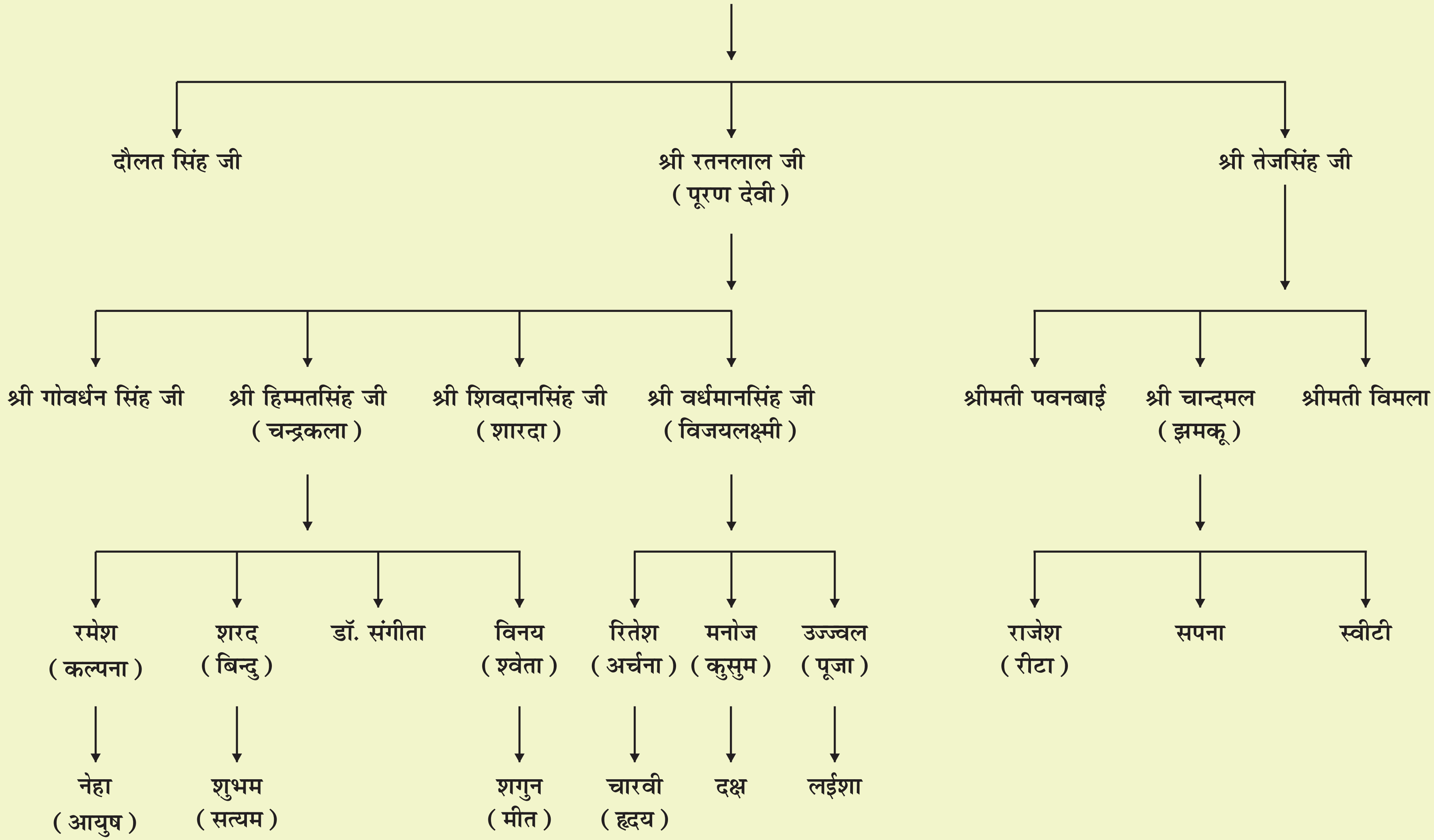

दौलत सिंह जी
श्री रतनलाल जी
(पूरण देवी)
श्री तेजसिंह जी
श्री गोवर्धन सिंह जी
श्री हिम्मतसिंह जी
(चन्द्रकला)
श्री शिवदानसिंह जी
(शारदा)
श्री वर्धमानसिंह जी
(विजयलक्ष्मी)
श्रीमती पवनबाई
श्री चान्दमल
(झमकू)
श्रीमती विमला
रमेश
(कल्पना)
शरद
(बिन्दु)
डॉ. संगीता
विनय
(श्वेता)
रितेश
(अर्चना)
मनोज
(कुसुम)
उज्ज्वल
(पूजा)
राजेश
(रीटा)
सपना
स्वीटी
नेहा
(आयुष)
शुभम
(सत्यम)
शगुन
(मीत)
चारवी
(हृदय)
दक्ष
लईशा

शोभागमल जी
(श्रीमती सुन्दर बाई)

- लक्ष्मण सिंह जी (शांता)
  - प्रेरित (शिवाली)
    - ध्रुव
    - ध्वनी
  - सुश्री शिवानी
- कृष्णा (बुद्धराज जी भण्डारी)
- हनुमन्त कुमार जी (सोहन देवी)
  - नक्षत्र कुमार (डॉ. सुषमा)
    - आकाश (डॉ. सुहानी)
      - मिराया
    - अंकित (टीना)
      - माही
  - सुधा (नवीनचन्द्र जी जैन)
  - मुकेश कुमार (अनिता)
    - अक्षय (सोनाली)
      - नितारा
    - शैफाली
    - आंचल
  - कल्पना (राजेन्द्र जी चपलोत)
  - दिलीप कुमार (मीनू)
    - पृवृत्ति (मुखरित जी)
    - अनुज (अनामिका)
- चन्दन बाला (गोविन्द सिंह जी श्रीमाल)
- प्रफुल्ल कुमार (विमलेश)
  - पल्लवी मेहता (मनीष जी मेहता)
  - तन्वी बापना (नितिन बापना)
  - पल्लव
- अंजली (सज्जनमल जी चोर्डिया)
- श्रीमती विजया (सुमती जी जैन)

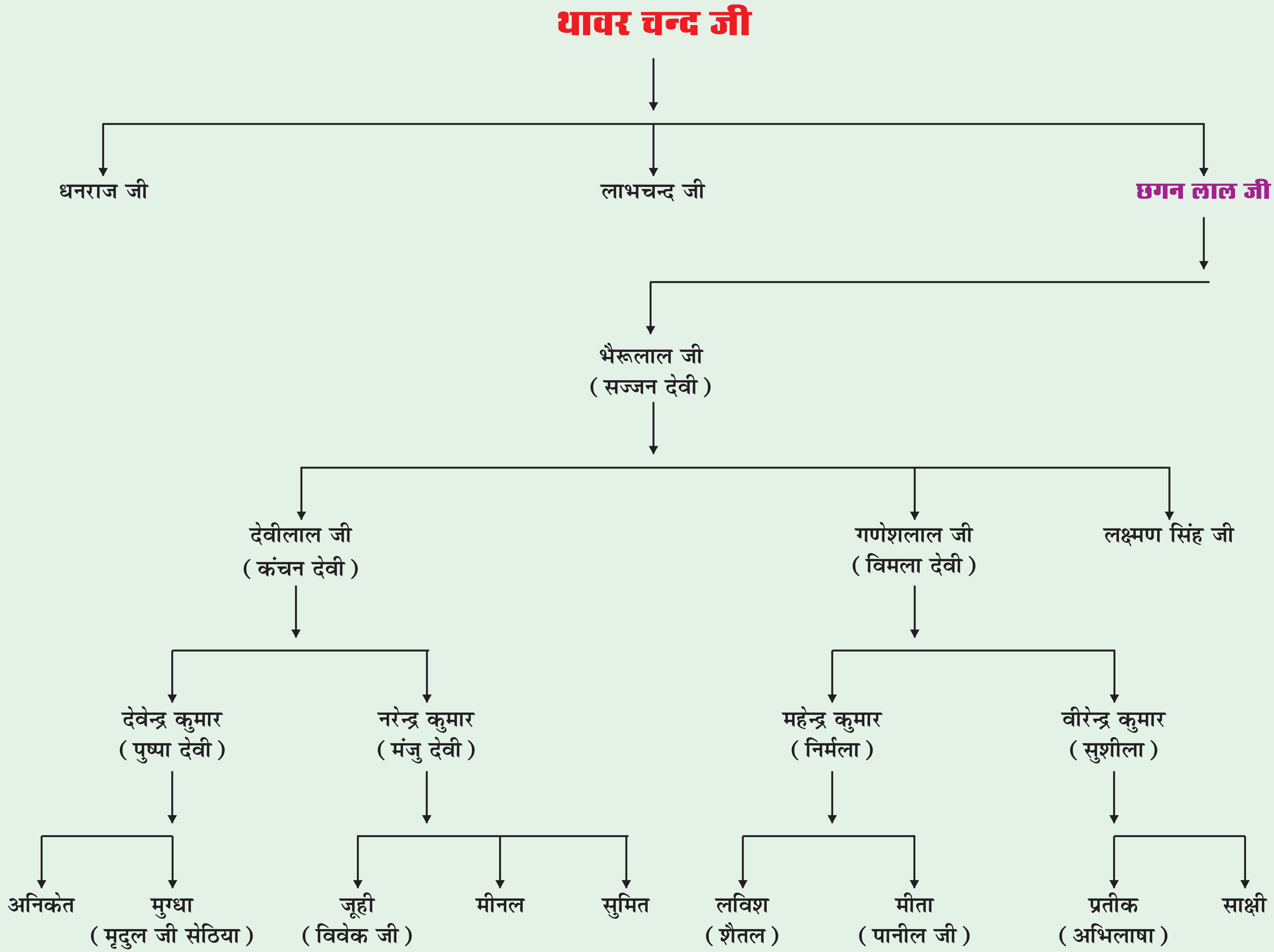
थावर चन्द जी
धनराज जी
लाभचन्द जी
छगन लाल जी
भैरूलाल जी
(सज्जन देवी)
देवीलाल जी
(कंचन देवी)
गणेशलाल जी
(विमला देवी)
लक्ष्मण सिंह जी
देवेन्द्र कुमार
(पुष्पा देवी)
नरेन्द्र कुमार
(मंजु देवी)
महेन्द्र कुमार
(निर्मला)
वीरेन्द्र कुमार
(सुशीला)
अनिकेत
मुग्धा
(मृदुल जी सेठिया)
जूही
(विवेक जी)
मीनल
सुमित
लविश
(शैतल)
मीता
(पानील जी)
प्रतीक
(अभिलाषा)
साक्षी

पारिवारिक वट वृक्ष

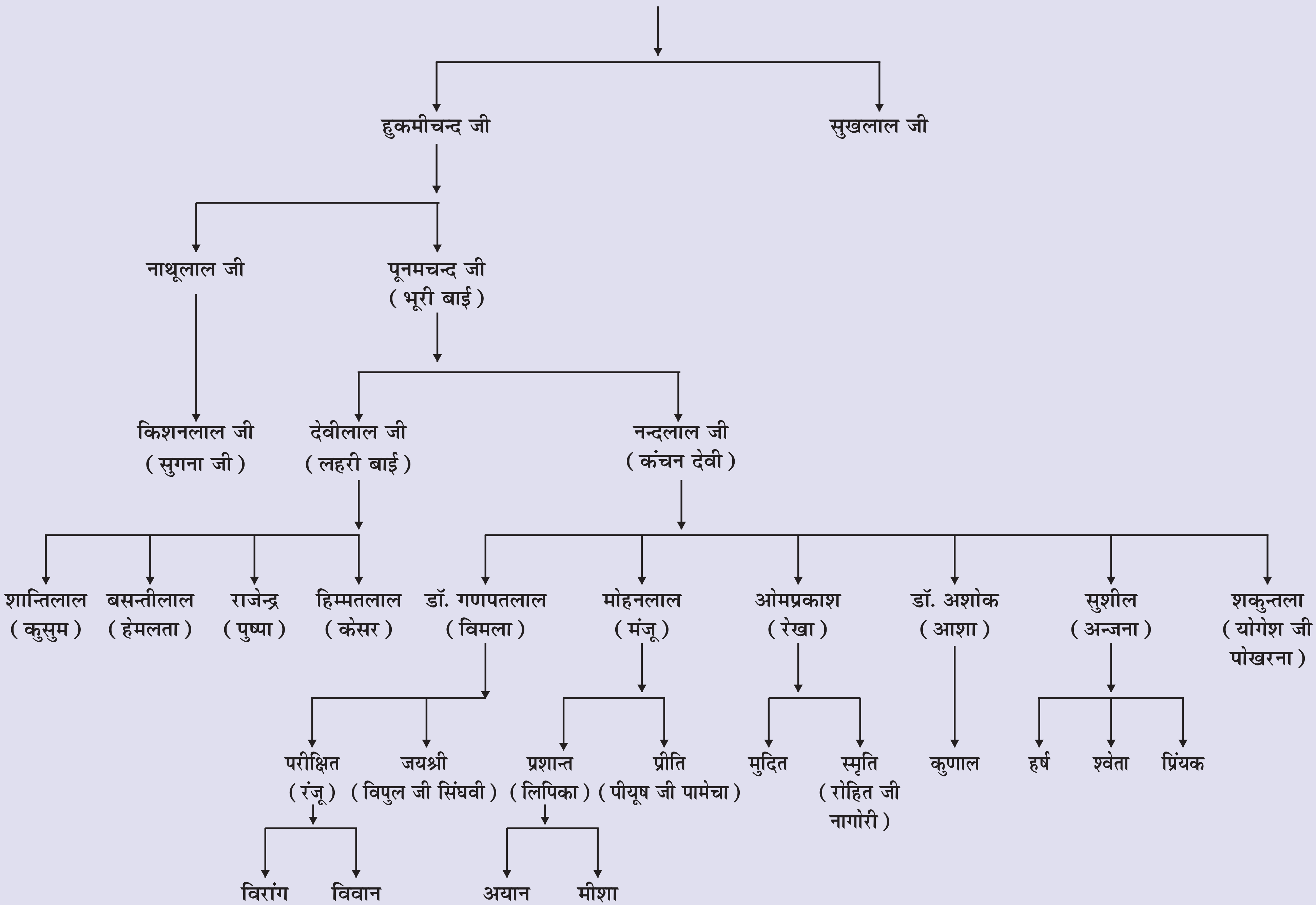
हुकमीचन्द जी
सुखलाल जी
नाथूलाल जी
पूनमचन्द जी (भूरी बाई)
किशनलाल जी (सुगना जी)
देवीलाल जी (लहरी बाई)
नन्दलाल जी (कंचन देवी)
शान्तिलाल (कुसुम)
बसन्तीलाल (हेमलता)
राजेन्द्र (पुष्पा)
हिम्मतलाल (केसर)
डॉ. गणपतलाल (विमला)
मोहनलाल (मंजू)
ओमप्रकाश (रेखा)
डॉ. अशोक (आशा)
सुशील (अन्जना)
शकुन्तला (योगेश जी पोखरना)
परीक्षित (रंजू)
जयश्री (विपुल जी सिंघवी)
प्रशान्त (लिपिका)
प्रीति (पीयूष जी पामेचा)
मुदित
स्मृति (रोहित जी नागोरी)
कुणाल
हर्ष
श्वेता
प्रिंयक
विरांग
विवान
अयान
मीशा

HAMER SINGH JI (SMT. MOHAN KANWAR)

- Smt. Sobhag Sunder (Bhanwar Lal ji Bolia)
- Lakshpal Singh (Chandra Kala)
  - Kamal (Bela)
    - Naman (Mamta)
      - Larisha
    - Saloni
  - Vinod (Dimple)
    - Jai
    - Lakki
    - Lakshya
- Smt. Kamla (Arjunlal ji Parmar)
- Chain Singh (Azad)
  - Abhishek (Meenakshi)
    - Subeer
  - Akshika (Manish ji Mehta)
- Chandra Kanta (Narpat Singh ji Baid)
- Dilip Kumar (Lalita)
  - Himanshu (Deepmala)
    - Darshil
    - Bhavya
  - Piyush (Monu)
    - Archi
    - Avni
    - Navya
  - Prateek (Neeta)
    - Askshra
    - Kiyansh
- Rakesh (Nirmala)
  - Chirag Kendrika (Rohansh)
  - Shweta (Ishwar ji Vagrecha)

पारिवारिक वट वृक्ष

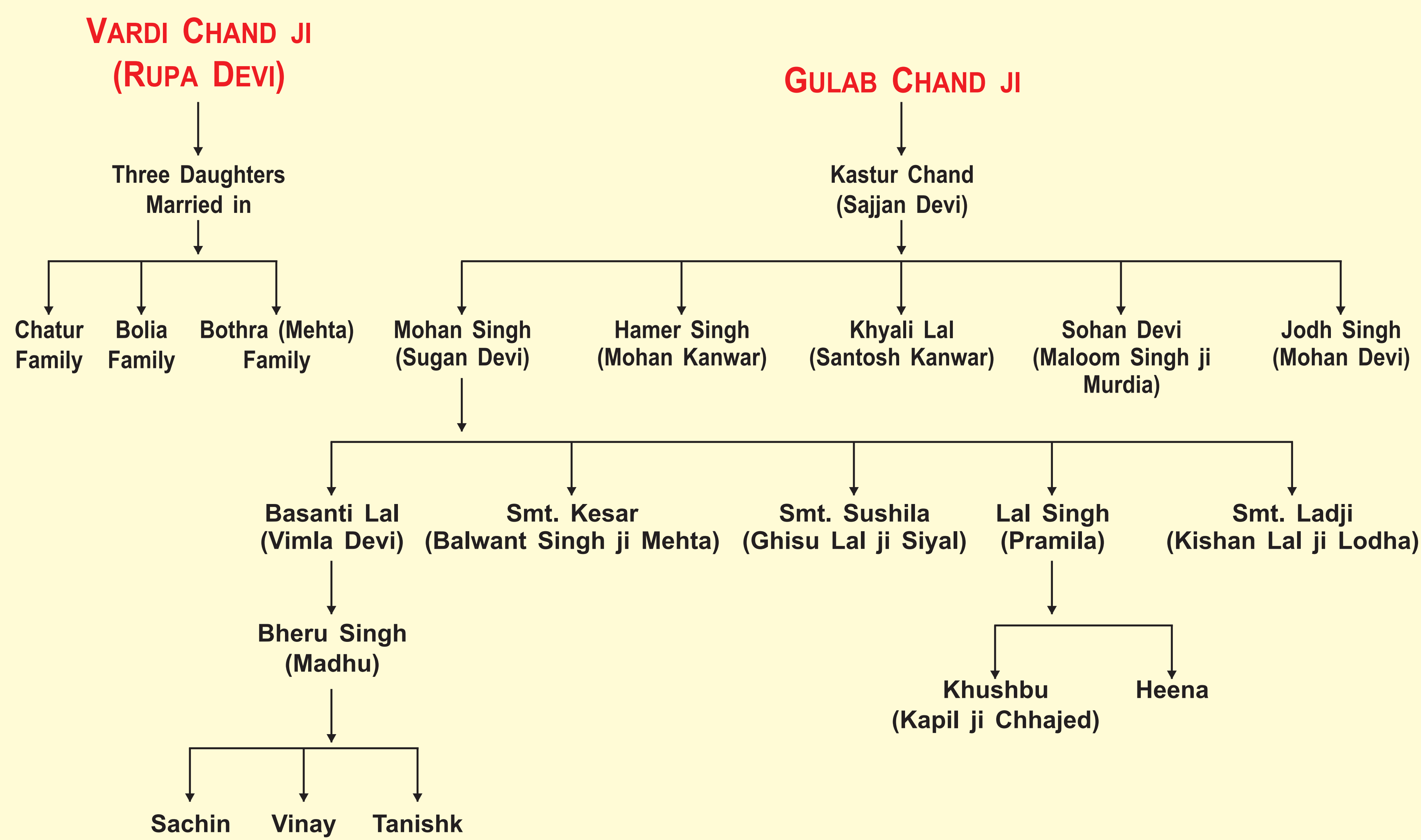

VARDI CHAND JI
(RUPA DEVI)
Three Daughters
Married in
Chatur
Family
Bolia
Family
Bothra (Mehta)
Family
GULAB CHAND JI
Kastur Chand
(Sajjan Devi)
Mohan Singh
(Sugan Devi)
Hamer Singh
(Mohan Kanwar)
Khyali Lal
(Santosh Kanwar)
Sohan Devi
(Maloom Singh ji
Murdia)
Jodh Singh
(Mohan Devi)
Basanti Lal
(Vimla Devi)
Smt. Kesar
(Balwant Singh ji Mehta)
Smt. Sushila
(Ghisu Lal ji Siyal)
Lal Singh
(Pramila)
Smt. Ladji
(Kishan Lal ji Lodha)
Bheru Singh
(Madhu)
Khushbu
(Kapil ji Chhajed)
Heena
Sachin
Vinay
Tanishk

KHYALI LAL JI
(SMT. SANTOSH KANWAR)

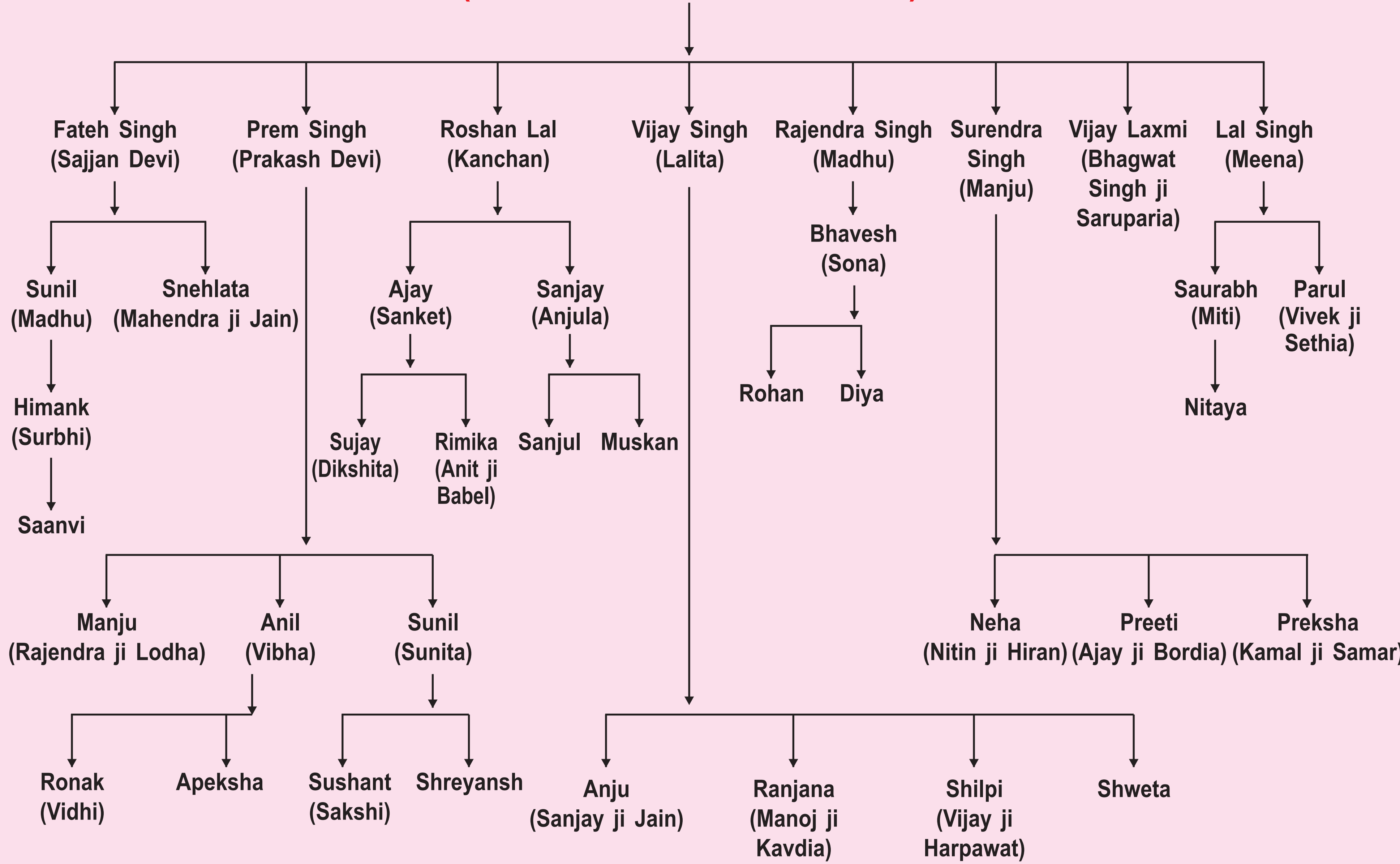

जैन–जनगणना–जागृत रहना है व सभी को जागृत करना है

यही सही वक्त है- 2000 के जनगणना की प्रक्रिया 2021 से शुरू होगी, जैनों की सही लोक संख्या राष्ट्रीय जनगणना में आना आवश्यक है, इसलिए हर जैन परिवार को सतर्क रहना जरूरी है।

● *हम क्या कर सकते हैं:–* जनगणना फॉर्म एवं एनीपीआर भरने के लिए अधिकारी आपके घर आएंगे, *उस समय धर्म के कॉलम में सिर्फ जैन लिखें।* हिन्दू / हिन्दू जैन / जैन हिन्दू / मारवाड़ी / स्थानकवासी / मंदिरमार्गी / दिगम्बर जैन ऐसा कतई न लिखें।

● *धर्म के कॉलम में सिर्फ जैन लिखें, जाति के कॉलम में कभी जैन न लिखें :–* धर्म के कॉलम के बाद जाति का कॉलम आता है, *जाति के कॉलम में कभी जैन न लिखें।* जैन अपना धर्म है, जाति के कॉलम में कभी भी जैन न लिखें। जैन अपना धर्म है, जाति यह धर्म की उपशाखा होती है जैन एक स्वतंत्र धर्म है। जैन किसी भी धर्म अन्य धर्म की उपशाखा नहीं है, ये कृपया समझ लें, इसलिए जाति कभी भी जैन न लिखें, *सैतवाल, ओसवाल पोरवाल आदि। अपनी जाति है।* स्थानकवासी, मंदिरमार्गी, तेरापंथी, दिगम्बर ये हमारे पंथ है *पंथों का उल्लेख जनगणना फार्म में आवश्यक नहीं है।*

● *एक जरूरी बात हैं :– धर्म के कॉलम में जैन जरूर लिखें, पर जाति का कॉलम रिक्त छोड़ सकते हैं, आप चाहो तो अज्ञात* ऐसा भी लिख सकते हैं। पर गलती से अगर जाति के कॉलम में आप जैन लिखते हो तो आपके धर्म का पंजीकरण जैन न होने की संभावना अधिक है। जनगणना फॉर्म सामान्यतः जनगणना अधिकारी खुद लिखाते हैं, भरते हैं। कई बार हमें बगैर पूछे ही धर्म का कॉलम अपने मन से लिखते हैं, ऐसे में अपना रिकार्ड जैन ही होगा। इसकी कोई गारण्टी नहीं। इसलिए फॉर्म भरने के पश्चात् *हमें इस बात पर विशेष गौर करना होगा कि धर्म के कॉलम में सिर्फ और सिर्फ जैन ही लिखा गया हो, इसके पश्चात् ही फॉर्म पर दस्तखत करें।*

● *अत्यंत महत्वपूर्णः–* जनगणना अधिकारी ऑफिस टाईम यानि 10 से 5 बजे के दरम्यान अपने घर पर आते हैं, सहसा इस समय घर में महिलाए वंब च्वेह ेनेक ीस ंभावनाह ेतीह ै,इ सलिएघ् ारक ी महिलाओं को इस विषय की जानकारी देकर अवश्य जागृत करें।

● *अधिक सतर्कता के लिए :–* इस बार जनगणना एवं एनपीआर कागज के फॉर्म के बजाय पाम-टॉप पर डिजिटल स्वरूप में हो सकती है, कृपया अपने धर्म के कॉलम का मोबाइल पर फोटो खींचकर सेव करें, जनगणना बेवसाईट पर हम अपनी जानकारी की जाँच कर सकते हैं, कुछ करेक्शन हो तो ये फोटो हमारे लिए प्रूफ हो सकता है।

श्रद्धा सुमन

विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित है उन सभी को जो वर्ष 2020-21 में हमारा साथ छोड़ गये :-

1.	श्रीमती रूप कंवर W/o स्व . श्री भंवरलाल जी तलेसरा	11.01.20
2.	श्रीमती बादाम बाई डाड M/o श्रीमती सुषमा नक्षत्र जी	31.05.20
3.	श्री बलवंत सिंह जी S/o स्व. श्री जोधसिंह जी तलेसरा	11.06.20
4.	श्री विजय कुमार जी S/o श्री चुन्नी लाल जी तलेसरा	08.08.20
5.	श्रीमती रतन बाई चौधरी D/o स्व. श्री डुंगर सिंह जी	09.08.20
6.	श्री भंवर लाल जी S/o स्व. श्री देवी लाल जी तलेसरा	11.08.20
7.	श्री रोशन लाल जी S/o स्व. श्री ख्याली लाल जी तलेसरा	30.12.20
8.	श्रीमती चंद्रकला दलाल M/o श्रीमती अनिता मुकेश जी	15.01.21
9.	श्रीमती विमलादेवी W/o स्व. श्री बसंती लाल जी तलेसरा	14.01.21
10.	श्री प्रमोद भण्डारी B/o श्रीमती संगीता पवन जी तलेसरा	28.01.21
11.	श्री तख्त सिंह जी S/o स्व. श्री कन्हैया लाल जी तलेसरा	19.04.21
12.	श्री प्रेम सिंह जी S/o स्व. श्री ख्याली लाल जी तलेसरा	30.04.21
13.	श्री गणपत लाल जी S/o स्व. श्री नंद लाल जी तलेसरा	03.05.21

Printed Matter - Book Post

सेवामें,
श्रीमती/श्रीमान् ____________________

प्रेषक :
तलेसरा विकास संस्थान, उदयपुर
98, बड़ा बाजार, चौमुखा मन्दिर के पास,
उदयपुर-313001 (राज.)
Web : www.talesara.org
email : tvsudaipur@gmail.com
मो. 94141-58294 (अध्यक्ष) मो. 92697-38666 (सचिव)

करके देखें

•ऑटोसजेशन का प्रयोग

रात्रि में सब कार्यों से निवृत्त होकर जब सोएं, शरीर रिलेक्स हों, आंखें कोमलता से बंद हों, **'मेरी सहनशक्ति का विकास हो रहा है'** उक्त शब्दावली को नींद न आये तब तक दोहराते रहें। प्रयोग में निरंतरता बनी रहे, जिससे 1 महिनें के बाद स्वयं में बदलाव महसूस करेंगे।

•मंत्र का प्रयोग

ऊँ ऐं ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं – प्रतिदिन पूर्वाभिमुख होकर 108 जप करें। प्रत्येक पद के उच्चारण के साथ नए वस्त्र के एक-एक गांठ लगाएं। परिणाम- पारस्परिक सौहार्द का विकास होता है।

•आसन-प्राणायाम

त्रिकोणासन – दोनों पैरों को फैलाकर सीधें खड़े रहें। बाएं पावं के पंजें को बाई तरफ सीधा करें। पूरक करत हएु बाएं पंजे के पास बायां हाथ रखते हुए घूटने को मोड़े। दाहिने हाथ को धीरे-धीरे ऊपर ले जाएं। बाहं कानों को स्पर्श करेगी। कमर, कंधे और गर्दन को बाईं ओर झुकाएं। हाथ भी बाईं ओर सीधा झुकेगा। रेचन करते हुए कुछ क्षण रुकें। पूरक कर कमर और गर्दन को सीधा करें। हाथ को धीरे-धीरे शरीर के सामने ले आएं। बाईं ओर से बाएं हाथ को फैलाकर कोण बनाएं।

इसी प्रकार दाएं पैर और दाएं हाथ की ओर भी करें। समय सीमा का ध्यान रखें। एक आवृति में प्रारंभ में 1 मिनिट का समय लगे। अभ्यास के बाद तीन मिनिट तक ले जा सकते हैं।

लाभ-फेफड़े सुदृढ़ और शरीर में कांति की अभिवृद्धि होती हैं।

सामुदायिक जीवन है नैतिकता की प्रेरणा

जीवन का सामुदायिक प्रकार भी नैतिकता की आधारभूमि है। व्यक्ति अकेला ही होता तो उसके लिए अनैतिकता या नैतिकता की कोई कल्पना ही नहीं होती, पर जब वह सामाजिक जीवन जीता है, तब उसके लिए यह कल्पना स्वयं महत्त्वपूर्ण हो जाती है। वह समाज स्वस्थ समाज नहीं होता जहां हर व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को हड़पने की चेष्टा में हो, जहां छीना-झपटी का बाजार गर्म हो और सब एक-दूसरे को धोखा देने की धुन में हों। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की मर्यादा और अधिकार को समझकर चले, वही समाज स्वस्थ समाज होता है।

लक्ष्य हो 'आत्मा में रहना'

एक वकील तेली के घर गया। दोनों बातचीत कर रहे थे। वकील ने बाहर देखा - कोल्हू का बैल चल रहा था। वकील ने पूछा - इसकी आँखों पर पट्टी क्यों बांधी? तेली बोला - साहब! इसको यह पता न चले कि मैं एक जगह ही घूम रहा हूं, इसलिए पट्टी बांध दी। बात समाप्त हो गई। थोड़ी देर रूका और फिर पूछा- इसके गले में घंटी क्यों बांधी? बोला- साहब! मैं काम में लगा रहता हूं तो मुझे पता चल जाए कि बैल चल रहा है या रूक गया है। वकील बोला - यह खड़ा-खड़ा ही घंटा बजा देगा तो? तेली बोला - साहब! यह बैल है, वकील नहीं है।

हम शरीर में रहते हैं। पर जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य होना चाहिए आत्मा में रहना। वकील की अपनी अलग भाषा होती है, वह कानून की भाषा में बोलता है, आत्मा की भाषा में नहीं। हम जब-जब शरीर में होते हैं, दूसरी भाषा में बोलते हैं, दूसरी भाषा में सोचते हैं, दूसरी आंखों से देखते हैं। हम आत्मा में रहना सीख जाएं तो जीवन की सफलता का सबसे बड़ा मंत्र हमारे हाथ में आ जाएगा।

मानवता है नैतिकता की प्रेरणा

राष्ट्रीयता की तुलना में मानवता नैतिकता का अधिक सुदृढ़ आधार है। हर मनुष्य दूसरे मनुश्य को अपने ही समान समझे औरउ सकेप्रतिअ न्यायक रनेक ोअ पनेप्रतिअ न्यायक रना समझे तो अनैतिकता कहां से आएगी और कैसे टिकेगी? एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के प्रति अनैतिक व्यवहार कर यह सोचे कि मेरे प्रति कोई अनैतिक व्यवहार नहीं करेगा, वह आत्म-भ्रांति में जी रहा है। द्वार खुला है तो उसमें से कोई भी आ सकता है। जो मानव किसी एक मानव के साथ अन्याय कर रहा है, वह सब मानवों के साथ अन्याय कर रहा है। इसका तात्पर्य है कि वह समूची मानवता के प्रति अन्याय कर रहा है। इस मान्यता का विकास होने पर अनैतिकता की सीमा अपने-आप सिमट जाती है।

श्री पूनम चन्द जी तलेसरा
(पेमा बाई)

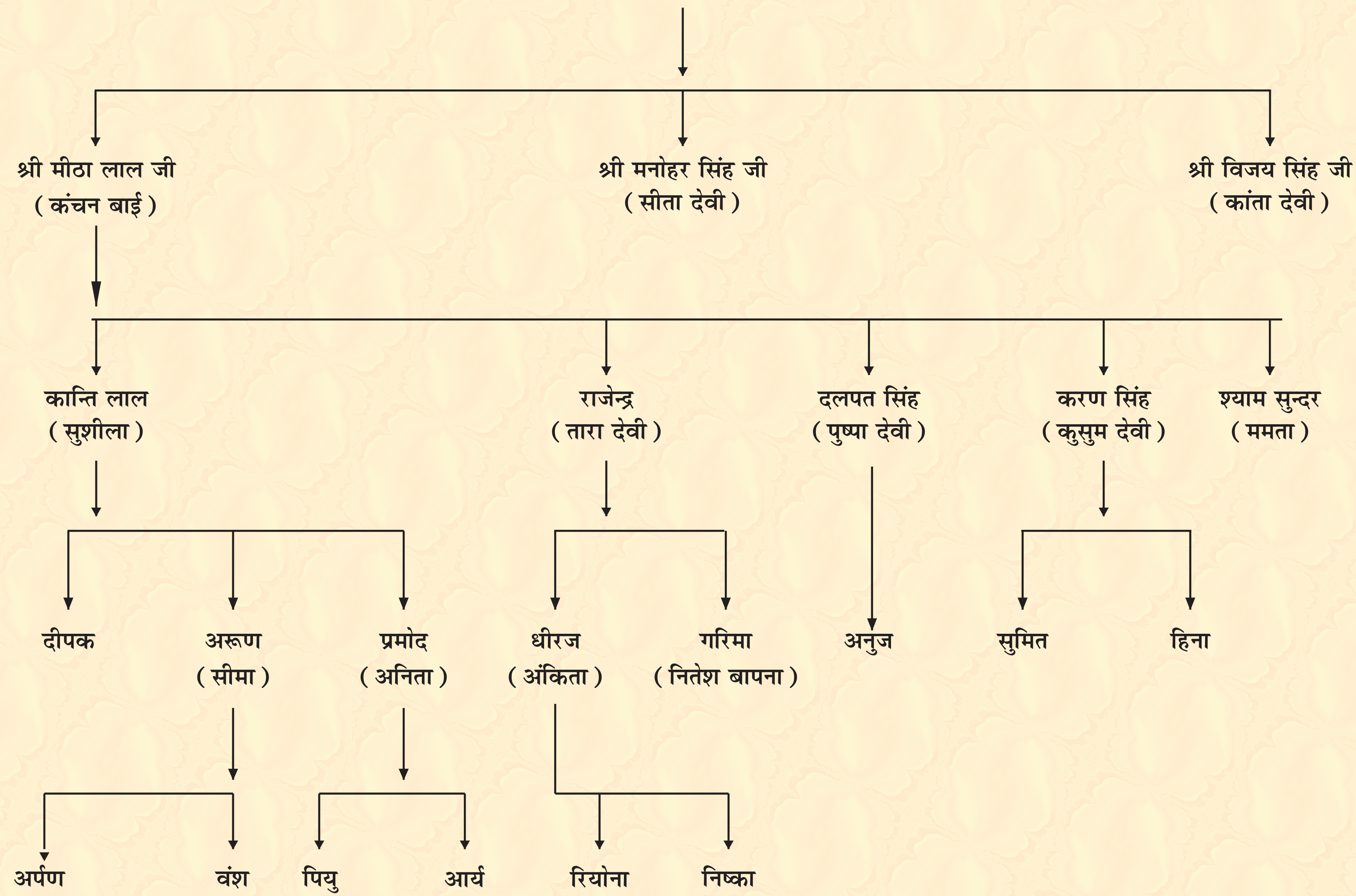

Talesara
TVs
An effort for togetherness

"पाथेय"

तलेसरा विकास संस्थान

कार्यालय : 98, बड़ा बाजार, चौमुखा मन्दिर के पास, उदयपुर-313001 (राज.)
Web : www.talesara.org • emial : tvsudaipur@gmail.com

सचिव की कलम से...

सबसे पहले आप सभी परिवारजनों को रंगों और उमंगों भरी होली पर्व की शुभकामनाएँ।

प्रस्तुत सत्र का यह दूसरा सूचना-पत्र "पाथेय"-2 होली विशेषांक आप सभी की जानकारी हेतु प्रेषित करते हुए मुझे अपार हर्श का अनुभव हो रहा है। इससे पूर्व प्रकाशित "पाथेय"-1 के संस्करण से आपका प्रेम, स्नेह व सराहना प्राप्त हुई। उसी स्नेह से प्रेरित होकर इसका दूसरा अंक के प्रकाशन का प्रयास सकारात्मक रूप से आगे बढ़ा है।

गत वर्ष कोरना काल का निश्चित रूप से हम सभी की जीवन शैली पर गहरा प्रभाव पड़ा है इसने हमें कई माईनों में बेहतर तरीके से जीने का पाठ पढ़ाया है। हालाँकि इसका प्रकोप अभी भी चल रहा है हम सभी को पूर्णरूपेण सतर्कता बरतनी होगी।

मैं उन सभी महानुभावों को अन्तःमन से साधुवाद अर्पित करता हूँ, जिन्होंने समाज के इस पुनीत कार्य के लिए विज्ञापन के माध्यम से आर्थिक सहयोग दिया है। "पाथेय"-2 होली विशेषांक के शुद्ध प्रकाशन में प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष सहयोग करने वाले सभी सज्जनों को भी मैं धन्यवाद देता हूँ।

हमारे पास कई परिवारों के वटवृक्ष और भी आयें हैं, लेकिन स्थानाभाव के कारण शेष सामग्री को अगले अंक में प्रकाशित किया जा सकेगा।

आशा है "पाथेय"-2 होली विशेषांक अंक आपके स्नेह व आशीष का पत्र बनेंगी।

आपका शुभेच्छु
प्रकाश तलेसरा

कार्यकारिणी 2017–2021

श्री पवन जी

श्री वैभू जी

श्री प्रकाश जी

श्री कुलदीपक जी

श्रीमती निर्मला

श्रीमती प्रणिता

श्री गगन जी

श्री विजय जी

श्री अंकित जी

श्री कमलेश जी

श्री सुनील जी

श्री महेन्द्र जी

''स्वास्थ्य'' वात विकार के परिणाम

मन की अस्थिरता औरा चंचलता व्यक्ति को अपने निश्चय सेडिग्राद`तीह` ।अ नेकल ेगक हतेह`ि कस् मरणशक्तिब हुत कमजोर है। बच्चों के बारे में भी ऐसी शिकायते आती हैं। छोटे बच्चों की स्मृति कमजोर होनी ही नहीं चाहिए। अस्सी की अवस्था पार कर जाने के बाद भी स्मृति कमजोर नहीं होनी चाहिए, लेकिन वह कमजोर हो जाती है। इसका कारण भी वायुवृद्धि है। वातवृद्धि स्मृति दौर्बल्य का एक प्रमुख कारण है। कुछ लोग कहते हैं कि डर बहुत लगता है। किसी घटना के होने पर डर लगना स्वाभाविक है। कुछ लोग आकारण ही डरे रहते हैं। प्रतिक्षण एक अज्ञात भय उनमें समाया रहता है। इस भय और घबराहटक`प ेछिे· ीव ायुक ा विकारह` ।क ुछल ेगस ेमास` ज्यादा बोलते हैं, अनावश्यक ही बोलते रहते हैं। इस वाचालता का कारण भी वायु विकार ही है। कुछ लोगों को हँसी-मजाक, व्यंग्य में बड़ा रस मिलता हैं। ये सारे वात विकार के लक्षण हैं। इन लक्षणों को जाकर हम मन के प्रभाव की मीमांसा करें। अगर हम मन को वैसा बनाना चाहते हैं, जिसमें वाचालता की स्थिति न हो, चंचलता की स्थिति न हो, भय और घबराहट की स्थिति न हो, तो हमें शरीर पर ध्यान देना होगा। केवल मन के द्वारा इन समस्याओं का समाधान पाना संभव नहीं है। यह समस्या का मूल कारण है। इसे पकड़े बिना समस्या का समाधान नहीं होगा।

पित्त के परिणाम

दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व पित्त है। पित्त उत्तेजक है, गर्म है। स्वाभाविक ही कि जिस व्यक्ति को क्रोध आए, उसमें पित्त की प्रधानता होगी। जब तक पित्त का शमन नहीं होता है, क्रोध का शमन नहीं हो सकता। प्रेक्षाध्यान में क्रोध के शमन हेतु सफेद और नीले रंग का ध्यान कराया जाता है। ज्योतिकेन्द्र, आनन्दकेन्द्र और विशुद्धिकेन्द्र पर नीले रंग का ध्यान, पूरे शरीर पर सफेद और नीले रंग का ध्यान कराया जाता है। इससे क्रोध की उत्तेजना कम हो जाती है। पित्त की उत्तेजना कम होती है तो मन अपने आप शांत हो जाता है। पित्त का मन पर जो प्रभाव होता है, वह है क्रोध का अतिरेक। पित्त बढ़ने का जो समय होता है, विशेषतः वह मध्यान्ह का समय है। दोपहर के समय किसी व्यक्ति से कोई बहुत गहरी बात नहीं करनी चाहिए। ऐसे काम के लिये ऐसा समय चुनना चाहिए, जब पित्त शांत रहे।

परिणाम नैतिक – अनैतिक वृत्तियों के

❖ हर व्यक्ति में चार प्रकार की वृत्तियों हैं -

● संग्रह ● आवेश ● गर्व (बड़ा मानना) ● माया (छिपाना)

❖ चार वृनियों और होती हैं। वे उक्त चार प्रवृत्तियों की प्रतिपक्षी हैं-

♦ त्याग या विसर्जन ♦ शांति ♦ समानता या मृदुता ♦ ऋजुता या स्पष्टता

❖ ये दोनों प्रकार की प्रवृत्तियाँ वैयक्तिक हैं, इसलिए इन्हें अनैतिक और नैतिक नहीं कहा जा सकता। इन्हें आध्यात्मिक (या वैयक्तिक) दोष और गुण कहा जा सकता है। इन वृत्तियों के परिणाम समाज में संक्रांत होते हैं, उन्हें अनैतिक और नैतिक कहा जा सकता है।

अनैतिक वृत्तियों के परिणाम

● **संग्रह की मनोवृत्ति के परिणाम** ❖ शोषण ❖ अप्रामाणिकता ❖ निरपेक्ष-व्यवहार ❖ क्रूर-व्यवहार ❖ विश्वासघात।

● **आवेश की मनोवृत्ति के परिणाम** ❖ गाली-गलौज ❖ युद्ध ❖ आक्रमण ❖ प्रहार ❖ हत्या।

● **गर्व की मनोवृत्ति के परिणाम** ❖ घृणा ❖ अमैत्रीपूर्ण व्यवहार ❖ क्रूर-व्यवहार।

● **माया के परिणाम** ❖ अविश्वास ❖ अमैत्रीपूर्ण व्यवहार।

नैतिक वृत्तियों के परिणाम

● **त्याग की मनोवृत्ति के परिणाम** ❖ प्रामाणिकता ❖ सापेक्ष व्यवहार ❖ अशोषण।

● **शांति की मनोवृत्ति के परिणाम** ❖ वाक्-संयम ❖ अनाक्रमण ❖ समझौता ❖ समन्वय।

● **समानता की मनोवृत्ति के परिणाम** ❖ सापेक्ष व्यवहार ❖ प्रेम ❖ मृदु व्यवहार।

● **ऋजुता की मनोवृत्ति के परिणाम** ❖ मैत्रीपूर्ण व्यवहार ❖ विश्वास।